तिलस्मी खंजर

जादू टोने की सचित्र कहानी

तिलस्मी खंजर

प्रकाशक

फैजान आकाडमी
राजपूत मार्केट उर्दू बाजार लाहौर

तिलस्मी खंजर

अफ़ाक़ का जन्म भले ही एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था, लेकिन इकलौता होने के कारण उसे जीवन की हर सुख-सुविधा उपलब्ध थी। उसके माता-पिता उसकी देखभाल करके अपना गुज़ारा करते थे। अब जब वह लगभग सात साल का हो गया था, उसके पिता

अशफ़ाक़ अहमद ने उसका दाखिला स्कूल में करवा दिया। शुरुआत में अफ़ाक़ को स्कूल आना-जाना बहुत मुश्किल लगता था। लेकिन धीरे-धीरे उसे इस दिनचर्या की आदत हो गई, पढ़ाई के प्रति उसका जुनून बढ़ा और वह नियमित रूप से स्कूल जाने लगा। पाँच साल में उसने पाँचों कक्षाएँ पास कर लीं। अफ़ाक़ के माता-पिता और शिक्षक उससे बहुत खुश थे। वे दूसरे लड़कों को उसकी आज्ञाकारिता और मेहनत की मिसाल देते थे।

अफ़ाक़ मन से भी बहुत खुश था। और अपने काम से भी बहुत संतुष्ट था। अचानक उसकी खुशी पर किसी नासमझ की नज़र पड़ी कि अफ़ाक़ की माँ गंभीर रूप से बीमार हो गई है। अब अफ़ाक़ के लिए मुश्किलों का दौर शुरू हो गया था। इसी बीच, उसकी देवी समान माँ भी गंभीर रूप से बीमार थी, और उसके पिता का घर से दूर रहना उसके लिए बहुत चिंता का विषय था। वह अपनी माँ को छोड़ नहीं सकता था और न ही स्कूल छोड़ना चाहता था।

अत्यंत दुःख की स्थिति में वह अपने शिक्षक के पास गया और उन्हें सारी स्थिति से अवगत कराया।

यह सुनकर शिक्षक थोड़ा दुखी हुए और उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि वह सुबह अफ़ाक़ की माँ के घर जाकर उनकी देखभाल करें ताकि उन्हें अपनी माँ की चिंता न करनी पड़े और वह निश्चिंत होकर स्कूल जा सकें। लेकिन किस्मत का लिखा कौन मिटा सकता है? अफ़ाक़ की माँ के इलाज और एहतियात के बावजूद, उनकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ और बीमारी बढ़ती ही गई। और वह बेहद कमज़ोर हो गईं। शहर से आकार जब अफ़ाक़ के पिता अशफ़ाक़ अहमद ने अपनी पत्नी की हालत देखी, तो उन्हें बहुत चिंता हुई।

उसने अपने शहर के बड़े-बड़े डॉक्टरों को बुलाया, लेकिन कोई भी इलाज उसे ठीक नहीं कर सका और अंततः एक शाम वह भगवान को प्यारी हो गई।

अफ़ाक़ अपनी माँ की मौत से बहुत दुखी था।

कई दिनों तक वह इस दर्द को बर्दाश्त नहीं कर सका। धीरे धीरे वह सामान्य हो गया। शिक्षा के प्रति उसका जुनून और बढ़ गया। लेकिन अफ़ाक़ के पिता अशफ़ाक़ अहमद अपनी पत्नी की मौत का सदमा बर्दाश्त नहीं कर सके और गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। कुछ समय की बीमारी ने उन्हें कमज़ोर कर दिया और वह बहुत कमज़ोर हो गए। अपने पिता की यह हालत देखकर अफ़ाक़ बहुत दुखी हो गया और वह हर समय अपने पिता के पास ही रहने लगा। उसने स्कूल जाना भी बंद कर दिया।

लिखना छोड़ दिया, चित्रकारी छोड़ दी, यहां तक कि खेल खेलने का विचार भी दिल से निकाल दिया। कुछ दिनों बाद, उनकी (उनके पिता की) हालत बहुत खराब हो गई ।

जब उसकी हालत बिगड़ गई तो वह रोते हुए अपने पिता के भाई (चाचा) भाई नजीर अहमद के पास गया।

और रोते हुए उन्हें पूरी स्थिति बताई।

अफ़ाक़ का चाचा एक स्वार्थी और क्रूर व्यक्ति था। उसने बहुत समय पहले अपने भाई से नाता तोड़ लिया था। अब जब उसने अपने भाई की बीमारी के बारे में सुना, तो

अफ़ाक़ के साथ हो लिया और वह एक डॉक्टर को अपने साथ ले गया।

लेकिन जब अफ़ाक़ और उसका परिवार घर पहुँचा, तो अशफ़ाक़ अहमद अपनी आखिरी साँसें गिन रहा था। डॉक्टर उसकी हालत देखकर निराश हो गए और नज़ीर अहमद से कहा कि अब बचने की कोई उम्मीद नहीं है।

अशफ़ाक़ अहमद ने अफ़ाक़ को अपने पास बुलाया, उसे सीने से लगाया, उसका माथा चूमा और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए अपने भाई नज़ीर अहमद से कहा, "भाई, मेरी जान जा रही है। मेरा बेटा इस दुनिया में अकेला रह गया है। तुम उसे अपना बच्चा समझो, उसका ख़्याल रखो और उसकी पढ़ाई-लिखाई का ध्यान रखो।"

नज़ीर अहमद बोला, "भाई, यह क्या कह रहे हो?"ईश्वर आपको स्वस्थ रखे और आपका साया इसके सिर पर बना रहे।"

अशफ़ाक़ अहमद ने कहा, "नहीं भाई! जीना मुमकिन नहीं है। मुझे पता है कि मेरी हिम्मत अब जवाब दे चुकी है। आप मेरे बेटे के सिर पर अपना हाथ रखें ताकि मेरी जान आराम से निकल सके

फिर नज़ीर अहमद ने अफ़ाक़ के सिर पर हाथ रखा और कहा, "मैं वादा करता हूँ कि मैं इसे अपने बेटे से भी ज़्यादा प्यार करूँगा और इसकी बेहतर शिक्षा-दीक्षा का इंतज़ाम करूँगा।" अशफ़ाक़ अहमद ने कृतज्ञता भरी नज़रों से अपने भाई नज़ीर अहमद को देखा। इसी बीच, उसकी तबियत फिर बिगड़ गई और वह हमेशा के लिए अपने असली पैदा करने वाले से मिल गया।

नज़ीर अहमद ने अपने भाई के मरते ही सारी संपत्ति और दौलत अपने हाथ में ले ली और ऐशो-आराम की ज़िंदगी जीने लगा। कुछ समय तक तो उसने अफ़ाक़ की देखभाल की, लेकिन जल्द ही अपनी पुरानी स्थिति में लौट आया और अफ़ाक़ अहमद के साथ नौकरों जैसा व्यवहार करने लगा। उसके जूते और कपड़े बहुत खराब हालत में थे। अक्सर जब वह स्कूल से लौटता, तो उसे खाना खिलाने की बजाय कोई न कोई काम सौंप देता। और अगर वह कुछ कहता, तो उसे जालिम की तरह पीटता। उसे खाने को कुछ भी अच्छा नहीं मिलता था, लेकिन कभी-कभी अफ़ाक़ को भूखा ही रहना पड़ता था।

13

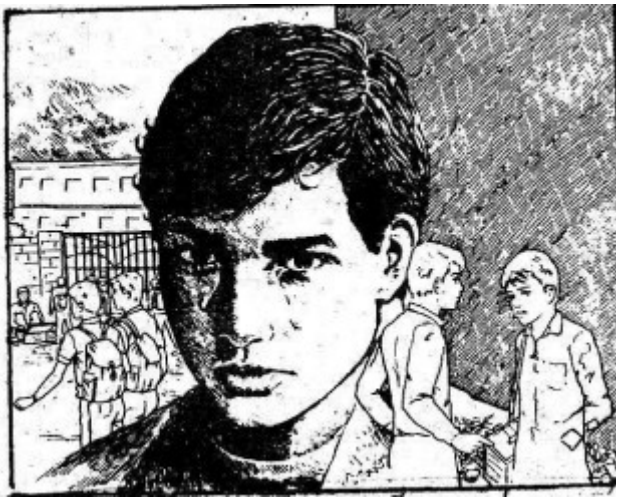

ऐशो-आराम की ज़िंदगी जी रहा बच्चा भला कब तक ऐसी ज़िंदगी जी सकता था? जल्द ही वह इस ज़िंदगी से तंग आ गया और एक दिन उसने अपने चाचा से कहा, "चाचा! मेरे पिता की सारी संपत्ति आपके पास है, लेकिन आप मुझे कुछ नहीं देते, कपड़े, जूते, टोपियाँ, असल में मेरे पास जो कुछ भी है, वो किसी गरीब से भी बदतर है।" ये सब चीज़ें दिखाती हैं कि आप मेरा पालन-पोषण नहीं कर सकते।

चाचा बोले, "बदज़ुबान लड़के, तो फिर तुम्हारा क्या मतलब है?"

अफ़ाक़ बोला, "मुझे नए जूते, नए कपड़े और नई टोपियाँ दे दो ताकि मैं यहाँ से चला जाऊँ और कभी वापस न आऊँ।"

नज़ीर अहमद ने मन ही मन खुदा का शुक्रिया अदा किया कि मुसीबत टल गई। उसने कहा, "मैं अब तुम्हारी चाची को बता दूँगा ताकि वह तुम्हारे कपड़े ठीक कर दे।"

इसलिए नज़ीर अहमद ने अपने भाई के कपड़ों की मरम्मत इस तरह करवाई कि उनकी चौड़ाई तो वही रही, लेकिन लंबाई कम कर दी गई। पगड़ी की लंबाई ज़रा भी कम नहीं की गई। तीसरे दिन, सुबह-सुबह ये कपड़े उसे दे दिए गए। हालाँकि कपड़े उसके बदन पर बिल्कुल ढीले थे, फिर भी वह उन्हें पहनकर बहुत खुश हुआ, यह सोचकर कि ये उसके पिता के कपड़े हैं। वह अपने चाचा से बिना कुछ कहे घर से निकल गया और जिस तरफ मुंह उठाया , चल पड़ा।

कई गलियों और बाज़ारों से गुज़रने के बाद, वह एक ऐसे इलाके में पहुँचा जहाँ उसे भूख लगने लगी। उसकी जेबें खाली थीं।

उसने सोचा - अगर मैं कुछ खरीदना भी चाहूं तो नहीं खरीद सकता।

वह धीरे-धीरे भूख बर्दाश्त करते हुए चल रहा था कि तभी एक घर के पास पहुँचा और देखा कि एक बुढ़िया दरवाज़ा खोलकर बाहर आ रही है। कुछ देर सोचने के बाद उसने उससे कहा, "तुम्हें नौकर की ज़रूरत तो नहीं है।"

बुढ़िया ने बड़े ध्यान से उसके चेहरे को और फिर कपड़ों को देखा और बोली, "ये कपड़े तुम्हें किसने दिए?"

उसने कहा, "ये मेरे अब्बा जान के कपड़े हैं।"

उसने पूछा, "वो क्या करते हैं ?"

अफ़ाक़ की आँखों में आँसू भर आए और फिर उसने धीमी आवाज़ में कहा, "वो अल्लाह को प्यारे हो गए हैं। इस दुनिया में मेरा कोई नहीं है । मैं अकेला हूँ।"

बुढ़िया ने दयापूर्वक उसके सिर पर हाथ फेरा, उसका हाथ पकड़ा, उसे घर के अंदर ले गई और उसे एक तख़्त पर बिठाते हुए कहा, "मैं तुम्हें अपने घर में रखूँगी और समझूँगी कि अल्लाह ने मुझे एक बेटा दिया है, बिल्कुल तुम्हारी तरह,

मैं भी इस दुनिया में अकेली हूँ। अपने मन बहलाने के लिए मैंने खरगोश, बिल्लियाँ और एक कुत्ता पाल रखा है। मैं तुमसे कोई काम नहीं लूँगी । बस मेरे बाद इन जानवरों का ध्यान रखना।

अफ़ाक़ ने कहा, "मैं उनका ध्यान रखूँगा, यह मेरे लिए बहुत आसान काम है।"

बुढ़िया ने उसके लिए दुआ की और दो प्लेटों में खाना ले आई। अफ़ाक़, जो पहले से ही भूख से व्याकुल था, तुरंत खाने के लिए बैठ गया। और बुढ़िया यह कहते हुए चली गई, "बेटा, यह घर अब तुम्हारी हिफ़ाज़त में है और तुम होशियारी से रहना ।"

खाना खाने के बाद, अफ़ाक़ ने घर में घूमकर उसका मुआयना किया। घर बहुत बड़ा था। घर में लगभग आठ-नौ कमरे थे। एक कमरे में रेशमी चादर बिछी थी और उस पर मुलायम और नाज़ुक बिस्तर बिछा था। खिड़कियों और दरवाज़ों पर रेशमी पर्दे लटके थे। दीवारों पर कालीन बिछे थे और रोशनी के लिए एक सुंदर झूमर जलाया गया था। पाँच-छह कमरे तरह-तरह की चीज़ों से सजे हुए थे।

जबकि एक कमरे का दरवाज़ा बंद था और उसमें ताला लगा था। रसोई में हर तरह के बर्तन रखे थे। लेकिन हैरानी की बात यह थी कि वहाँ न तो चूल्हा था और न ही कोई ईंधन। उसने सोचा कि बुढ़िया खाना कैसे पकाती होगी। फिर उसने एक अलमारी खोली। उसमें सोने-चाँदी के बर्तन भी थे। लेकिन घी, नमक, मिर्च, मसाले किसी चीज़ में नहीं थे। यह बहुत अजीब बात थी और उसे समझ नहीं आ रहा था।

खरगोश और बिल्लियाँ बहुत शरारती थे। वे सब साथ खेलते, लड़ते-झगड़ते और चीज़ें बिगाड़ते रहते थे। अफ़ाक ने उन्हें ठीक करता और जब तक बुढ़िया लौटी, अफ़ाक बहुत थक चुका था। लेकिन उसने बुढ़िया से कोई शिकायत नहीं की। शाम हो गई थी और खाने का समय हो गया था। बुढ़िया रसोई में गई और एक प्लेट में खाना ले आई। यह देखकर अफ़ाक को आश्चर्य हुआ कि यह कैसा खाना है।

उसने कब और कैसे बनाया? चूँकि बुढ़िया बाहर से बस कुछ ही फल लाई थी, इसलिए उसने बुढ़िया से पूछना उचित नहीं समझा और चुपचाप खाना खाने लगा।

वह रोज़ सोचता कि आज बुढ़िया से पूछेगा कि खाना कौन बनाता है। और कैसे बनाता है, पर बुढ़िया के सामने कहने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी। इसी तरह दिन बीतते गए और बुढ़िया के पास आए उसे लगभग तीन महीने हो गए और अफ़ाक़ सोचने लगा कि अब यहाँ रहना ठीक नहीं। अब उसे अपनी ज़िंदगी गुलाम सी लगने लगी, वो भी जानवरों का गुलाम। अफ़ाक़ सोचने लगा कि अब इस दुनिया में रहते हुए कुछ काम कर लूँ, पर किसी और ही ख्याल से वह निराश था क्योंकि उसकी जेब पूरी तरह खाली थी। अगर वह इस घर में चला भी जाता, तो अपना पेट कैसे भर पाता? उसके लिए उसे पैसों की ज़रूरत थी। कहाँ से आते? अगर बुढ़िया ने मुझे अपना बेटा कहने के बजाय नौकरी पर रख लिया होता, तो आज मेरी तनख्वाह में से बहुत पैसे बच जाते।

यह सोचकर वह उदास हो गया। वह आँगन में टहलने लगा - अचानक उसे ख्याल आया कि बुढ़िया ने एक कमरा बंद करके रखा है। उसने उस कमरे में कहीं कोई धन छिपा रखा है।

अफाक ने मन ही मन सोचा, यहाँ से भागने के लिए मुझे चोरी करनी पड़ेगी। उसने एक हथौड़ा उठाया और कमरे में गया और हथौड़े की मदद से दरवाजा खोलने में कामयाब हो गया। सबसे पहले उसने एक थाली में कुछ रुपये रखे देखे। फिर उसने देखा कि एक बड़ी सी म्यान खूँटी पर ऐसे लटकी हुई थी मानो वह तलवार हो। उसने उसे उतारा और म्यान से एक चमकदार खंजर निकला। धार भी बहुत साधारण थी, पर थी बहुत खूबसूरत। मेज के एक तरफ चाँदी के तारों से बनी टोकरी में एक जोड़ी चप्पल रखी थी। ये चप्पलें (जूते) बहुत हल्की थीं। जब उसने जूते अपने पैरों में पहने, तो वह यह सोचकर खुश हुआ कि ये उसके पैरों को आराम देंगे। कमरे में और कोई अच्छी चीज़ नहीं थी।

उसने पैसे जेब में रखे, खंजर कमर में बाँधा, दरवाजा बंद किया और बाहर चला गया। उसी समय बुढ़िया का कुत्ता उसके सामने खड़ा था। उसे देखकर उसने पहले कभी नहीं भौंका था। पर अब वह जोर-जोर से भौंकने लगा। मानो उसे पता चल गया हो कि अफाक ने चोरी की है। अफाक ने इसकी जरा भी परवाह नहीं की और धीरे-धीरे दरवाजे से बाहर निकलकर दरवाजा बंद करके एक ओर चल दिया।

20

अफाक शहर से निकलकर एक छोटे से जंगल में घुस गया। यहाँ आकर उसने राहत की साँस ली और मन ही मन यह सोचकर संतुष्ट हुआ कि बुढ़िया यहाँ तक नहीं पहुँच सकी और ये पैसे, खंजर और चप्पलें (जूते) अब मेरी संपत्ति हैं। मैं दूसरे शहर जाकर काम करूँगा और ऐशो-आराम की ज़िंदगी बिताऊँगा।

वह शाम तक जंगल में घूमता रहा, पर बाहर नहीं निकल पाया। आखिरकार उसने सोचा कि अब अँधेरा हो रहा है, तो क्यों न आराम कर लिया जाए? फिर उसने रात काटने के लिए कुछ करने का निश्चय किया।

उसे एक पेड़ पसंद आया और वह उस पर चढ़ गया। दिन भर की थकान के कारण खुली हवा में थोड़ी ताज़गी थी। उसे तुरंत नींद आ गई और वह सो गया।

रात में उसे सपना आया कि बुढ़िया का कुत्ता कह रहा है, "तुम बहुत भाग्यशाली हो, जब भी तुम अपने पैसों से कुछ खरीदो, तो कभी भी किसी गरीब दुकानदार से मत खरीदो। इसके बजाय, हमेशा किसी अमीर दुकानदार के पास जाओ क्योंकि यह पैसा उसके पास नहीं रहेगा, बल्कि तुम्हारी जेब में वापस चला जाएगा।

स्लीपर भी एक बेहतरीन चीज है। आप इसे उठाकर एड़ी के बाईं ओर तीन बार घुमाएँ, और अपना दाहिना हाथ म्यान पर रखकर धीरे से कहें, "मुझे फलां जगह ले चलो। यह स्लीपर तुम्हें उस जगह ले जाएगा।" और यह खंजर, जो पैसों और स्लीपरों की तरह जादुई है, अपने आप उस जगह हरकत में या जाएगा जहाँ खजाना दफन है।

सुबह जब उसकी आँखें खुलीं, तो वह लेट कर मन ही मन सोचने लगा, "यह सपना था या हकीकत? मुझे इसे ज़रूर आज़माना चाहिए।" यह सब जादू लग रहा था। चूँकि बुढ़िया जो खाना मुझे देती थी और खुद खाती थी, वह किसी ने नहीं बनाया था, इसलिए मुझे पहले से ही इसका

शक था, अब मुझे यकीन हो गया कि यह जादू से ही मिला था।

वह पेड़ से उतरा, उसे उठाया और एड़ियों के बल बाईं ओर तीन चक्कर लगाए। फिर म्यान पर हाथ रखते हुए बोला, "मुझे राजधानी ले चलो, और उसी क्षण उसकी टाँगें हरकत में आईं ।"

वह ऐसे चल रहा था मानो दौड़ रहा हो, लेकिन उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसके पैर ज़मीन से ऊपर हैं, मानो वह उड़ रहा हो। कुछ ही पलों में वह एक चहल पहल वाले नगर में पहुँच गया। भूख से उसका बुरा हाल था, इसलिए वह तुरंत एक बड़ी फल की दुकान पर गया और दो रुपये के फल खरीदे और एक जगह बैठकर बड़े मजे से उन्हें खाने लगा।

फल खाते-खाते उसने जेब से पैसे निकाले। यह देखकर कि पैसे उतने ही थे जितने वह जेब में लाया था, वह बहुत खुश हुआ और मन ही मन कहने लगा कि दुकानदार को दिए पैसे वापस मिल गए। इसका मतलब है कि पैसे कभी खत्म नहीं होंगे, लेकिन वह सोचने लगा कि उसे कोई शाही नौकरी मिल जाए ताकि उसकी ज़िंदगी सड़कों और बाज़ारों में न गुज़रे। यही सोचते-सोचते वह राजमहल के द्वार पर

पहुँचा और द्वारपालों से पूछा, "क्या मुझे कोई शाही नौकरी मिल सकती है?"
" तुम्हारे सवाल का जवाब केवल सबुक्तगीन ही दे सकता है। वह शाही सेवकों का सरदार है। उन्हीं की सिफ़ारिश पर मुझे यह नौकरी मिली है।

अफ़ाक़ ने उससे कहा, "मुझे उसके पास ले चलो। अगर मेरी क़िस्मत साथ देगी, तो मुझे नौकरी मिल जाएगी।"
एक दरबारी उसे सरदार सबुक्तगीन के पास ले गया। उसने अफ़ाक़ को गौर से देखा और फिर पूछा, "तुम्हें किस तरह के काम का अनुभव है?"

अफ़ाक़ ने कहा, "महाराज! मैंने अब तक मदरसे में ही समय बिताया है। माता-पिता के देहांत के बाद, मैं अपनी शिक्षा जारी नहीं रख सका। अब मैं काम करके दिन बिताना चाहता हूँ।" सरदार ने कहा, "मुझे आपसे सहानुभूति है और मैं चाहता हूँ कि आपको नौकरी पर रखा जाए। लेकिन इस समय हमें एक ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो अपने दिल की बात किसी को न बताए, अपने राज़ छुपाए रखे, और फुर्तीला और चालाक हो।"

अफ़ाक़ ने कहा, "महाराज, आप मेरी परीक्षा ले सकते हैं। मैं अपने राज़ किसी को नहीं बताऊँगा।"

सरदार ने कहा, "शाही संदेश लेकर जाने वाले कई दूत हमारे पास हैं, लेकिन अभी एक और दूत भी चाहिए जिसे सिर्फ़ राजा का निजी संदेश पहुँचाने के लिए नियुक्त किया जाएगा।

अफ़ाक़ ने कहा, "आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं। इसके अलावा, मैं आपको यह भी यकीन दिलाता हूँ कि मेरे पास कम समय में ज़्यादा से ज़्यादा दूरी तय करने की ताकत है।" सरदार हँसा और बोला, "क्यों नहीं? तुम अभी जवान हो, नया खून हो। बहुत तेज़ दौड़ सकते हो। लेकिन हमारा मानना है कि तुम हमारे दूत बिलाल का मुकाबला नहीं कर सकते।"

अफ़ाक़ ने कहा, "बड़बोला तो मैं नहीं बोलूँगा। अगर ऐसा मुक़ाबला हुआ तो मैं ज़रूर कहूँगा,
तो उन्हें शर्मिंदा होना पड़ेगा।

यह सुनकर सरदार खुश हुआ और उसे अपने घर मेहमान के तौर पर बुलाया।

दो दिन बाद उसने राजा से सलाह करके पाँच मील की दौड़ आयोजित की और शहर में इसकी घोषणा करवाई। लोग खेल-तमाशे देखने के लिए हमेशा उत्सुक रहते हैं।

प्रतियोगिता वाले दिन हज़ारों लोग आते थे। सबुक्तगीन ने प्रतियोगिता में ग्यारह दूत भेजे।

उनमें से लगभग हर एक लंबा-चौड़ा जवान और हट्टा-कट्टा युवक था। उनके सामने अफ़ाक़, दुबला-पतला और नाटा था। देखने वाले हैरान और चिंतित थे कि यह लड़का इन युवकों से कैसे जीत सकता है? राजा और मंत्रियों के आते ही मुकाबला शुरू हो गया। कुछ ही देर में युवक कहीं जा पहुँचे, और अफ़ाक़ बहुत पीछे रह गया। एक मोड़ पर पहुँचते ही अफ़ाक़ रुक गया, एड़ी उठाई और खंजर पर हाथ रखकर तीन चक्कर लगाए और बोला, "ऐ मेरे खंजर, मुझे सब से पहले वहाँ पहुँचा दे जहाँ से हम पहले चले हैं।"

बस फिर क्या था? उसके पैर ज़मीन पर भी नहीं पड़ रहे थे, मानो वह उड़ रहा हो। तब तक वो ग्यारह युवक दो मील से कुछ ज़्यादा की दूरी तय कर चुके थे, और हर एक मन ही मन कह रहा था, "लड़के से मुकाबला करने का क्या फ़ायदा? हम तो एक-दूसरे से ही मुकाबला कर रहे हैं।" लेकिन जैसे ही अफ़ाक़ किसी रोमांचकारी तीर की तरह उनके पास से गुज़रा, उनके होश उड़ गए और

वह और भी तेज़ी से दौड़ने लगे , लेकिन अफ़ाक़ पहले ही तय जगह पर पहुँच गया। लोगों ने तालियाँ बजाईं। सरदार ने खुश होकर उसे कंधे पर उठा लिया और राजा द्वारा अपने गले से हार उतार कर उसे पुरस्कृत किया गया

प्रतियोगिता में हारने वाले युवकों ने सरदार से कहा कि उन्हें इस युवा लड़के की गति से ईर्ष्या हो रही है। सच तो यह है कि कोई पक्षी भी उसका मुकाबला नहीं कर सकता। प्रशंसा के ये शब्द राजा के दिल को छू गए और उन्होंने अफ़ाक़ को अपना निजी दूत नियुक्त कर लिया।

शाही महल के पीछे एक खूबसूरत इमारत थी जहाँ सिर्फ़ वही नौकर-चाकर रहते थे जिन्हें बादशाह का निजी नौकर कहा जाता था, क्योंकि बादशाह उन्हें अपने प्यार से तनख्वाह देता था। अफ़ाक़ को भी उसी इमारत में एक कमरा दिया गया था, और वे लोग अपने बीवी बच्चों के साथ रहते थे, लेकिन अफ़ाक़ का वक्त बहुत मुश्किल से गुजरता था

उसे बहुत कठिनाई हो रही थी क्योंकि वह अकेला था और उसे महल से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी, इसलिए वह या तो अपने कमरे में ही रहता था या भवन के पीछे सुनसान बगीचे में घूमता रहता था।

इस बाग़ में घने पेड़ों, झाड़ियों और पौधों के अलावा खाइयाँ, गड्ढे और नाले भी थे, इसलिए वहाँ घूमना मुश्किल भी था। नौकरों ने अफ़ाक़ को मना किया था कि वह वहाँ न जाए, लेकिन वह जहाँ भी समय बिताना चाहता, वहाँ चला जाता।

एक दिन वह एक ताड़ के पेड़ के पास से गुज़रा और खंजर दो-तीन बार हिल गया। वह रुक गया और मन ही मन सोचने लगा, "इस जगह में खजाना गड़ा है। खंजर के बारे में जो मुझे बताया गया था, वह कितना सच है?" उसे एक नुकीला पत्थर मिला और वह वहीं बैठकर खुदाई करने लगा। लगभग ढाई घंटे खुदाई करने के बाद, वह खुशी से उछल पड़ा। उसे एक सन्दूक मिला , उसने धीरे से संदूक खोला। वह सोने-चाँदी के सिक्कों से भरा था। उसने अपना कोट उतार दिया।

उसने अपनी कमीज़ की जेबें इन सिक्कों से भर लीं, फिर थैला खोला और उसे पहन लिया, घड़ी बाँधी, और थैला कंधे पर लटका लिया। वह अपने कमरे में वापस चला गया।

रात को बाकी कर्मचारी अफ़ाक के कमरे में बैठे। अफ़ाक ने उन सभी को मुट्ठी भर सोने-चाँदी के सिक्के दिए और कहा कि इन्हें संभाल कर रखना, मुश्किल वक़्त में काम आएंगे, और किसी को इसके बारे में मत बताना। सिक्के पाकर कर्मचारी बहुत खुश हुए और उस दिन के बाद से वे अफ़ाक का बहुत ख्याल रखने लगे। जैसे-जैसे दिन बीतते

गए, वे फिर से सिक्के माँगने लगे। इसी तरह, उन्होंने उन्हें दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ सिक्के दिए।

इस तरह एक दो दिन बाद, वह दो-तीन मुट्ठी सिक्के लेकर चले जाते । उसके पास जितने भी सिक्के थे, सब खत्म हो गए। जब सिक्के खत्म होने लगे, तो यह बात मंत्री के कानों तक पहुँची और उसने अफ़ाक पर नज़र रखने के लिए दो जासूस नियुक्त कर दिए ताकि उस पर नज़र रखी जा सके और पता चल सके कि वह सोने-चाँदी के सिक्के कहाँ से ला रहा है।

चूँकि अफ़ाक़ के सिक्के खत्म हो गए थे, इसलिए उसने फिर से मिट्टी खोदी, संदूक खोला, अपनी जेबों में सोने-चाँदी के सिक्के भरे, और गड्ढा बंद करके अपने कमरे में लौट आया। जासूसों ने राजा को इसकी सूचना दी। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगा कि यहाँ सिक्के किसने गाड़े हैं, लेकिन उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसने कई सिपाहियों और नौकरों को साथ लिया और जाकर संदूक निकलवाया।

सिक्कों के नीचे बहुमूल्य पत्थरों से भरे चार घड़े थे।

वह मोती, हीरे और रत्नों से भरा था, और एक सोने के डिब्बे में एक नोट था। उस पर लिखा था,

"इस सन्दूक में मेरा ख़ज़ाना है, मैंने इसे मुश्किल वक़्त के लिए बचाकर रखा है।लेकिन ईश्वर की मुझ पर कृपा रही है और मुझे इसकी कोई आवश्यकता नहीं पड़ी, इसलिए मैं इसे सन्दूक में रख रहा हूँ। यदि किसी के पास यह पहुँच सके, तो इसे जरूरतमंदों और लोगों में बाँट दें और इसे अपनी विलासिता पर खर्च न करें। - --- आगा शाह

राजा ने कहा, "यह खजाना मेरे दादा का है। इसे लेकर महल में जाएँ।"

सैनिक संदूक उठाकर महल में ले आए। राजा ने उसे अपने कमरे में रख लिया। फिर उन्होंने अफाक को अपने कमरे में बुलाया और उससे पूछा कि उसे इस खजाने के बारे में कैसे पता चला। वह बताने को तैयार नहीं हुआ। अंत में राजा ने क्रोध में अपनी तलवार खींच ली और कहा, "यदि तूने मुझे नहीं बताया, तो मैं तेरी गर्दन काट दूँगा।" अब अफाक के पैरों तले से ज़मीन खिसक गई और वह बहुत घबरा गया ।

और कहा, "आलम पनाह , मैंने इस दुनिया में अभी तक कुछ नहीं देखा, मुझे जीने दो। मेरे पास ये स्लीपर हैं जो मुझे दौड़ने में मदद करते हैं, और मेरे पास एक खंजर है। यह तब काम करता है जब मेरे ये स्लीपर मुझे उस स्थान पर ले जाते हैं जहाँ खजाना गड़ा होता है।"

राजा ने उसे आदेश दिया कि वह ये सारी चीजें उसके सामने सिंहासन पर रख दे।

उसने कहा, "हे राजा, उन्हें मेरे पास रहने दो, अन्यथा मैं बर्बाद हो जाऊंगा।"

राजा गुस्से से चिल्लाया, "इन्हें उतार दो, वरना इनके साथ तुम भी अपनी जान गँवा दोगे।"

मरता क्या न करता ?

बेचारे ने खंजर और स्लीपर सिंहासन पर रख दिए। फिर राजा ने सिपाहियों को आदेश दिया कि उसे एक बंद गाड़ी में बिठाकर शहर के बाहर जंगल में छोड़ दिया जाए। और अगर वह लड़का कभी दोबारा शहर में दिखे तो उसे तुरंत मार दिया जाना चाहिए।

अफाक रोने लगा, लेकिन राजा ने कोई दया नहीं दिखाई और सिपाही उसे एक बंद गाड़ी में ले गए और जंगल में छोड़ दिया।

अफ़ाक़ गहरे सदमे में था। वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया और रोने लगा। रोते-रोते उसकी आँखें लाल हो गईं। फिर उसे लगा कि सूरज ढलने वाला है, इसलिए वह रात बिताने के लिए जगह ढूँढ़ने निकल पड़ा। चलते-चलते वह एक नदी के किनारे पहुँच गया। थोड़ी ही दूरी पर, फलों से लदे पेड़ थे। उन पर लगे फल आकार में अंजीर जैसे थे। यह देखकर वह बहुत खुश हुआ और मन ही मन कहने लगा कि भगवान ने उनको यहाँ भेजा है।

उसने भोजन देकर भूख से मरने से बचाया और वह एक पेड़ पर बैठकर फल खाने लगा।

उसने फल खाए और सो गया। फल बहुत मीठे और स्वादिष्ट थे। वह बहुत संतुष्ट था।

सुबह जब उसकी आँख खुली, तो वह पेड़ से उतरकर पानी पीने नदी पर गया। मुँह धोते समय अचानक उसकी नज़र अपने प्रतिबिंब पर पड़ी।

वह अपना रूप देखकर हैरान रह गया क्योंकि उसकी नाक बहुत लंबी हो गई थी, आँखें गोल और कान गधे जैसे बड़े थे और चेहरा झुर्रियों से भरा था और ऐसा लग रहा था मानो वह कोई बूढ़ा आदमी हो। अपनी यह हालत देखकर उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

वह बहुत देर तक रोता रहा। अंत में वह उठा और मन ही मन बोला, "मैं अपने इस रूप के साथ किसी के सामने नहीं जाऊँगा। जो भी इसे देखेगा, मेरा मज़ाक उड़ाएगा। तमाशा करेगा। अब मैं इसी जंगल में रहूँगा और ईश्वर का धन्यवाद करूँगा।"

वह नदी के उस पार गया और वहाँ भी उसी आकार के फल पड़े थे। उसने वहाँ से फल तोड़े और खाने लगा। कुछ देर बाद जब वह हाथ-मुँह धोने नदी पर आया, तो अपना रूप देखकर हैरान रह गया क्योंकि अब वह अपने असली रूप में था। अब वह सोचने लगा कि इन फलों को खाने से आकार बदल जाता है और इस पार के फल खाने से असली रूप वापस आ जाता है।

पानी पीने के बाद वह एक पेड़ के नीचे लेट गया और काफी देर तक विचारों में खोया रहा।

अचानक उसे ख्याल आया कि उसकी जेब में पैसे हैं जो दुकानदार को देने के बाद अपने आप उसकी जेब में वापस आ गए। यह ख्याल आते ही वह नदी पार करके एक पेड़ पर चढ़ गया और कुछ फल खा लिए। फल खाते ही उसकी आँखें, नाक और कान बदल गए। उसने पगड़ी और ढीला कोट झाड़ियों में छिपा दिया, पैसे अपनी कमीज़ की जेब में रखे और सीना ताने शहर की ओर चल पड़ा, उसे किसी बात की चिंता नहीं थी ,

न ही उसे कोई पहचान पाएगा , न ही उसकी गर्दन कटेगी ।

उसने एक टोपी, जूते और कोट का कपड़ा खरीदा और उसे सिलाई के लिए दर्जी को दे दिया।

एक हफ़्ते बाद, उसने अपने नए कपड़े पहने, पेड़ से कुछ फल तोड़े और शहर की ओर चल पड़ा। वह महल की ओर जाने वाले रास्ते पर बैठ गया।

जब शाही रसोइया वहाँ से गुज़रा, तो उसने देखा कि अंजीर बिक रहे है, इसलिए वह रुक गया और मन ही मन सोचा, "बाज़ार में अभी तक अंजीर नहीं आए हैं। अगर मैं ये अंजीर ले आऊँ, तो राजा बहुत खुश होंगे।" फिर उसने कुछ फल खरीदे और महल में ले गया ।

राजा, रानी, राजकुमारी सामरा और दो मेहमान दोपहर के भोजन पर बैठे थे। जब रसोइये ने उनकी थालियों में फल रखे, तो वे बहुत खुश हुए और बड़े चाव से खाने लगे।

राजकुमारी सामरा की नज़र जब राजा पर पड़ी, तो वह चीख़कर बोली, "आपकी नाक, ठोड़ी और लंबे कान बहुत सुंदर हैं।" राजा ने डरते हुए उसकी तरफ़ देखा और वह भी चिल्लाने लगा, "सामरा, तुम्हारे चेहरे को क्या हो गया?" फिर सब एक-दूसरे का चेहरा देखकर चिल्लाने लगे।

राजा के आदेश पर, महान वैद्य तैय्यब और ज़ैद को बुलाया गया, लेकिन किसी भी उपचार से उसकी पूर्व

आकृति वापस नहीं आ सकी। राजकुमारी अपने कमरे में लेटी रही। राजा शर्म के मारे दरबार में नहीं गया, और मेहमान भी अपने कमरों से बाहर नहीं निकले। हर पल बड़ी मुश्किल से बीता।

इस प्रकार पंद्रह दिन बीत गए और अंततः राजा ने घोषणा की कि जो व्यक्ति उसे इस दुर्भाग्य से बचाएगा, उसे वह अच्छा इनाम देगा।

इस घोषणा के तीसरे दिन, एक व्यक्ति राजा की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने दावा किया कि वह आप सभी को आपका पूर्व रूप लौटा देगा। फिर उसने सभी को खाने के लिए दो फल दिए और कहा, "जिस प्रकार विष विष को और लोहा लोहे को काटता है, उसी प्रकार फलों का प्रभाव भी फल ही दूर करेंगे।"

फल खाते ही सबके चेहरे तुरंत खिल उठे और राजा खुशी से उछल पड़ा। पहले उसने हार उतारकर एक बार उसके गले में डाल दिया, फिर बोला, "मांगो जो चाहिए।"

उसने कमरे में चारों ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा, "मुझे कुछ नहीं चाहिए। हो सके तो मुझे यह चमकता हुआ बर्तन दे दो।"

राजा ने कहा, "यह बर्तन।"

"यह किस काम का है?"

उसने कहा। "मुझे, बेचारे को, कुछ नहीं चाहिए। यह थाली खाने के काम आएगी और आप समझोगे कि इनाम दे दिया है।"

राजा ने उसे कटोरा दे दिया और वह चला गया।

राजा ने सोचा कि उसे इस व्यक्ति का पता ही नहीं है, तो भगवान न करे, अगर फिर कभी ज़रूरत पड़ी, तो उसे कैसे बुलाया जाएगा? यह विचार आते ही उसने दो सेवकों को उसका नाम पता करने के लिए भेजा।

थोड़ी देर बाद सेवक लौटे और बोले, " आलम पनाह , वह आदमी असल में वही लड़का था जिसे खजाना चुराने के जुर्म में शहर से निकाल दिया गया था। महल से निकलते

ही उसने फल खाकर अपना रूप बदल लिया। फिर उसने अपने जूते उतारे, चप्पल पहनी और तेज़ी से भागा।"

राजा ने कहा, "वह दुष्ट लड़का कोई जादूगर है। उसने ज़रूर फल बेचकर हमारे पास भेजें होंगे , और वह अपनी खंजर और वह यहाँ खंजर और स्लीपर लेने आया होगा।

उसने मंत्री को बुलाया और उसे आदेश दिया कि पूरे देश में घोषणा कर दी जाए कि जो कोई भी जादूगर लड़के को ढूंढ ले तो उसे गिरफ्तार करके हमारे पास ले आए, हम उस लड़के को कभी जीवित नहीं छोड़ेंगे।

अफ़ाक़ ने जंगल से सारा सामान उठाया और खंजर पर हाथ रखकर कहा, "मुझे उस जगह ले चलो जहाँ कोई बड़ा ख़ज़ाना गड़ा हो।" उसके पैर ज़मीन से उठे और वह उड़ने लगा। उसके पैर ऐसे लग रहे थे मानो वह दौड़ रहा हो।

वह काफी देर तक उड़ता रहा, फिर एक निर्जन इलाके में एक दरगाह के पास ज़मीन पर उतरा। दरगाह के चारों ओर लाल पत्थरों की दीवार थी। वह इस दीवार के साथ-साथ चलने लगा, लेकिन खंजर टस से मस नहीं हुआ।

फिर वह दीवार फांदकर दूसरी तरफ गया और दरगाह के चारों ओर चक्कर लगाने लगा। उसने कई चक्कर लगाए।

लेकिन खंजर हिला ही नहीं। अब अफ़ाक़ बहुत चिंतित हुआ और बाहर आया। वह बैठ गया और सोचने लगा कि यहाँ खजाना कहाँ गड़ा है। वह सोच ही रहा था कि तभी एक तरफ से लगभग डेढ़ सौ साल की एक बूढ़ी औरत हाँफती और काँपती हुई, लकड़ी के एक डंडे पर टिकी हुई आई।

"भगवान तुम्हें लंबी उम्र और खुशियाँ दे, और मुझे यह खंजर दे,"

यह सुनकर अफाक ने मुँह बिचकाते हुए कहा,-- क्या ? लेकिन उसने खंजर देने से साफ़ इनकार कर दिया।

बुढ़िया ने जवाब दिया, "मैं यह खंजर अपनी कमर में बाँधूँगी और इस पर हाथ रखकर कहूँगी, 'बागी-बागी, नाचो, जिन्नी, जिन्नी, बेन, कोई मरे कोई जीए । मैं जवान हूँ, बस मैं जवान बन जाऊँगी।"

अफ़ाक़ बोला, "रुको, पहले मैं तुम्हारी बातों को परख लूँ।" फिर उसने खंजर पर हाथ रखा और बोला, "बागी, बागी, नाचो, जिन्नी, जिन्नी, बेन, कोई मरे, कोई जिए, मैं औरत बन जाऊ ।" और अफ़ाक़ अचानक औरत बन गया, और फिर वैसे ही करके अपनी असली अवस्था में लौट आया।

बुढ़िया बोली, "देख लिया, अब मुझे खंजर दे दो, ताकि मैं भी जवान बन जाऊँ।"

अफाक ने कमर से खंजर निकालकर बुढ़िया को दे दिया और उसने खंजर पर हाथ रखते हुए कहा, "बागी, बागी, नाचो, जिन्नी, जिन्नी, बेन , कोई मरे, कोई जिए, मैं जवान हूं, कोई मरे, कोई जिए, मैं जवान हूं"

और जैसे ही उसने बुढ़िया को देखा, वह एक सुंदर और जवान लड़की में बदल गई।
अफाक ने कहा, "अब तुम्हारी इच्छा पूरी हो गई है, इसलिए अब मुझे मेरा खंजर वापस दे दो।"

लड़की ने बड़ी अदा से कहा, "पहले मुझसे शादी करो।"

लड़की की यह बात सुनकर अफाक को बहुत गुस्सा आया और उसनेलड़की से कहा, "चलो, मुझे मेरा खंजर वापस दे दो, नहीं तो मैं तुम्हारा गला घोंट दूंगा।"

लड़की ने जवाब दिया, "यह खंजर मेरा है और मेरी चाची ने इसे चुराया था और अब तुमने यह खंजर चुरा लिया है, मैं इसे तुम्हें कभी वापस नहीं दूंगी।"

अफाक ने कहा, "तुमने जवान होने के लिए खंजर लिया था। अब जब तुम जवान हो गई हो, तो मुझे यह खंजर वापस दे दो।"

लेकिन लड़की अपनी ज़िद पर अड़ी रही, बोली, "मुझसे शादी कर लो।"

तंग आकर अफ़ाक़ बोला, "अगर नहीं देते तो मत दो। मेरे पास ये स्लीपर हैं जो मुझे उड़ा देंगे और बहुत अच्छी जगह ले जाएँगे।"

उसने चप्पलों को गौर से देखा और बोली, "मेरे राजा, ये चप्पलें मुझे दे दो। मैं इन्हें पहनकर राजा के महल जाऊँगी।"

अफ़ाक ने कहा, "अगर तुम चप्पलें ले लो, तो खंजर मुझे दे दो।"

उसने कहा, "अगर मैं तुम्हें खंजर दूँगी, तो तुम भाग जाओगे।"

अफ़ाक ने कहा, "नहीं, मैं नहीं जाऊँगा।"

लड़की ने खंजर अफ़ाक को लौटा दिया। अफ़ाक ने खुशी-खुशी खंजर वापस अपनी कमर में बाँध लिया और कहा,

"जाओ, अब अपनी राह लो। तुझे जवान बनना था, सो बन गई ।"

उसने कहा, "ठीक है, तुमने मुझे धोखा दिया है। अगर मैं तुम्हें धोखा दूँगी, तो सब कुछ भूल जाओगे ।।"

जवाब देने के बजाय, अफ़ाक़ ने खंजर पर हाथ रखा और अपनी बाईं एड़ी को दबाते हुए, उसे तीन बार घुमाया। उसने कहा, "मुझे किसी शहर के पास ले चलो।" वह उड़ने लगा।

और उड़ते उड़ते , थोड़ी देर में

वह एक सुन्दर नगर में पहुंचा और एक स्थान पर खड़ा होकर, अपने खंजर पर हाथ रखकर बोला, "बागी बागी, नाचो ,जिन्नी, जिन्नी, बेन, कोई मरे, कोई जिए, मैं चालीस वर्ष का बन जाऊँ"

और वह चालीस वर्ष का हो गया। अब उसे कोई पहचान नहीं सकता था। वह नगर में गया और एक बड़ी सराय में गया, खाना खाया और एक कमरा ले लिया और किराये पर रहने लगा .

वह सुबह-सुबह अपने कमरे से निकलकर बाहर अहाते में लेटा था। अचानक खंजर हिल गया। वह चौंका और उस जगह पर निशान बना दिया।

वह अंदर गया और सराय वाले को बुलाया तो उसने पूछा, "क्या तुम यहाँ किसी मुसीबत में हो?"
अफ़ाक़ हँसा और बोला, "नहीं, बात यह नहीं है। मुझे बताओ कि तुमने अब तक कितनी दौलत जमा कर ली है।"

सराय वाले ने कहा, "जो बचा है, वो जमा किया हुआ धन है, एक बीवी, एक बहन और थोड़ी-सी कमाई है। बस गुज़र-बसर हो रही है।"

अफ़ाक़ बोला, "अगर मैं तुम्हें ख़ज़ाने का ठिकाना बता दूँ, तो क्या तुम मुझे सराय वाले के हिस्से का आधा हिस्सा दोगे?"

उसकी आँखें खुल गईं और उसके मुँह से निकल पड़ा --" ख़ज़ाना ?

अफ़ाक़ बोला, "हाँ, ख़ज़ाना।"

उसने कहा, "मैं तुम्हें इसका आधा हिस्सा दे दूँगा और तुम्हारी सेवा करूँगा।"

अफ़ाक़ उसे अपने साथ ले गया और जहाँ उसने निशान लगाया था, वहाँ पैर रखते हुए कहा, "खज़ाना यहीं गड़ा है, इसे खोदकर निकालो।"

सराय वाले ने अपनी बीवी और बच्चों को बुलाया, उनके आस-पास की जगह को ढक दिया और उनके साथ ज़मीन खोदने बैठ गया।

ज़मीन से तीन बर्तन निकले, दो में कीमती पत्थर थे और एक में सोने की मोहरें ।

उसने अफाक को कीमती पत्थर से भरा एक बर्तन और आधे सोने के सिक्के सौंप दिये ।

सब पाकर सराय वाले के तो दिन ही बदल गए ।

अफ़ाक़ ने इस दौलत से एक दो मंज़िला मकान बनवाया और उसमें रहने लगा। बुढ़िया के घर से चुराए हुए पैसे उसकी जेब में रह जाते थे। वह उनसे चीज़ें खरीदता और वो पैसे फिर उसकी अपनी जेब में वापस आ जाते ।

इस तरह उसने घर को सुख-सुविधाओं और ज़रूरतों से भर लिया, लेकिन उसे सुकून नहीं मिला। उसे साथियों की ज़रूरत थी, पर उसे साथी नहीं मिले।

एक दिन उसने सोचा कि उसके पास कोई धन नहीं है और उसे दरगाह जाकर खजाना निकाल लेना चाहिए। अपनी खंजर और स्लीपरों की मदद से वह फिर से दरगाह पर पहुँचा। दरगाह के नीचे एक पीपल का पेड़ था। जब वह क्षितिज पर पहुँचा, तो खंजर चला और वह बैठ गया और ज़मीन खोदने लगा। ज़मीन खोदते-खोदते शाम हो गई, इसलिए वह दीवार फांदकर अंदर चला गया और एक तरफ़ सो गया। सुबह होते ही उसने फिर से ज़मीन खोदी।

इस तरह वह खोदता रहा। पाँच दिन बीत गए। छठे दिन उसे खजाना मिल गया। एक हीरा, वह एक लोहे के बर्तन में था। उसका वज़न ज़्यादा नहीं था, पर वह हीरा बहुत कीमती था। उसने बर्तन सिर पर रखा और अपने घर की ओर चल पड़ा। लगभग पाँच मील की दूरी तय करने के बाद, वह एक जगह पहुँचा जहाँ एक लड़की खाना तल रही थी। खाना देखकर उसके मुँह में पानी आ गया और उसने दो रुपये का खाना लिया और बड़े चाव से खाया। एक रुपया उसकी जेब में वापस आ गया।

यह देखकर लड़की चिल्लाई, "मेरा एक रुपया कहाँ गया?"

उसका शोर सुनकर अफ़ाक बहुत डर गया और उससे कहा कि वह उसके साथ शहर चले। वह शहर से उसे उसकी पसंद की चीज़ें खरीद कर देगा। यह सुनकर लड़की ने जल्दी से आग बुझाई और उसके साथ शहर चली गई। शहर पहुँचकर अफ़ाक ने उसे उसकी पसंद की हर चीज़ दिलवाई। वह इससे बहुत खुश हुई और लड़की खुशी-खुशी ये सारी चीज़ें लेकर घर चली गई। लड़की के जाते ही अफ़ाक ने खंजर पर हाथ रख दिया।

और वह अपने असली रूप में वापस आ गया। उस समय वह बहुत खुश था क्योंकि अब उसके पास बहुत धन-संपत्ति थी। फिर उसने सोचा कि क्यों न राजकुमार बन कर राजकुमारी समरा से विवाह कर ले। यह विचार आते ही उसने मन बना लिया और सुबह नाश्ते के बाद, उसने खंजर पर हाथ रखा और कहा, "बागी-बागी, नाचो, जेनी-जेनी, खून बहाओ। चाहे तुम मरो या जियो, मैं एक सुंदर राजकुमार बनूँगा।" और वह राजकुमार बन गया। फिर उसने कुछ हीरे, कुछ मोती और कुछ जवाहरात संदूक में डाले और घोड़े पर सवार होकर यात्रा पर निकल पड़ा।

वह राजा के महल में पहुँचा। दूतों ने खबर दी कि एक राजकुमार आया है, बहुत ही सुंदर और शिष्ट राजकुमार।

राजा ने तुरंत उसे बुलवाया और उसे देखते ही राजा उस पर मोहित हो गया। उसने उसे गले लगाया, अपने सामने बिठाया और खूब दुलार किया। फिर उससे पूछा, "तुम किस देश से हो और तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने कहा, "मेरा नाम राजकुमार अफाक है और मैं यमन देश का राजकुमार हूँ। मेरे तीन बड़े सौतेले भाई हैं जो मेरे दुश्मन हैं। मैं उनके जाल से बच निकला हूँ और आपकी छाया में रहने के विचार से आया हूँ।"

फिर उसने बक्सा खोलकर देखा।
राजा की आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं।

राजकुमार ने कहा, "मेरे पास और भी कीमती हीरे हैं।"

राजा ने कहा, "तुम मेरे मेहमान हो। जब तक चाहो रहो।"

उसने कहा, "मैंने तुम्हारी अनुमति के बिना इस शहर में एक घर बनवाया है। मैंने आज इसे सारे सामान से सजाया है। मैंने यह सब आपकी अनुमति के बिना किया है। इसलिए, मैं आप से अनुरोध करता हूँ की मुझे रहने की अनुमति दें ।"

राजा ने कहा, "तुम्हें अनुमति है, लेकिन कुछ दिन मेरे पास रहो।"
वह मान गया और राजा उसे अपने स्थान पर ले गया।

उसकी सुंदरता और प्रेम ने सभी लोगों के दिलों को मोह लिया।

इसलिए एक दिन रानी ने राजा से कहा, "हम राजकुमार अफाक को अपना बेटा बनाएंगे, और हम अपनी बेटी समरा का विवाह राजकुमार अफाक से करेंगे।"

राजा ने रानी के प्रस्ताव पर सहमति जताई और मंत्री के माध्यम से राजकुमार अफाक की इच्छा का पता लगाया। राजकुमार दिल से यही चाहता था। राजकुमार अफाक के सहमत होते ही राजा ने राजकुमारी समरा का विवाह राजकुमार अफाक से बड़ी धूमधाम से कर दिया और वे खुशी-खुशी रहने लगे।

एक दिन राजकुमारी महल से कुछ दूरी पर बगीचे में टहल रही थी कि उसने एक सुंदर लड़की को अपनी ओर आते देखा।

राजकुमारी ने पूछा कि तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है।
उसने कहा, मैं गली में रहने वाली एक गरीब लड़की हूं और मैं पकवान बेचती हूं। एक-दो बार मैंने तुम्हारे पति को पकवान खिलाए थे और बदले में उन्होंने मुझे बहुत सी

चीजें खरीदी थीं। आज मैं फिर से पकवान लाई हूं और यह बहुत स्वादिष्ट है। राजकुमारी ने कहा, "मेरे लिए भी कुछ लाओ।"

मैं देखूं तुम कैसा पकवान बनाती हो।' राजकुमारी ने खुशी-खुशी पकवान खाया और बेहोश हो गई।

राजकुमारी के बेहोश होते ही लड़की ने नौकरों की नज़र बचाकर महल में खोजबीन की और जादुई खंजर कमर में बाँधकर वहाँ से गायब हो गई। जब अफ़ाक वापस लौटा तो उसने राजकुमारी को बेहोश पाया। उसने महल में आए नौकरों से पूछताछ की और उन्हें लड़की की कहानी सुनाई। यह सुनकर अफ़ाक ने अपने कमरे की तलाशी ली और खंजर न पाकर उसे एहसास हुआ कि लड़की वही डेढ़ सौ साल वाली पुरानी औरत है। वह घोड़े पर सवार होकर उसकी तलाश में निकल पड़ा। लड़की उसे दरगाह के पास दिखाई दी।

उसे देखते ही बोली , "तुम अपना खंजर लेने आये हो, जो तुम्हें नहीं मिल रहा। मैंने इसे तहखाने की नालियों में रख दिया है। अब तो तुम्हारी किस्मत चमक गई है। तुम खंजर का क्या करोगे ?"

राजकुमार अफ़ाक गुस्से से बोला, "बंद करो बकवास और मुझे खंजर वापस दो।"

लड़की पीछे हट गई और गड्ढे में कूद गई। राजकुमार ने जब गड्ढे में देखा तो उसे कुछ भी नजर नहीं आया और वह निराश होकर वापस लौट आया।

उसे इस बात का दुःख था कि वह अपने मूल रूप में वापस नहीं आ सका क्योंकि उसके पास खंजर नहीं था।

राजा की मृत्यु के बाद वह राजसिंहासन का स्वामी बन गया और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगा।

देखो बच्चों, खुदा जिसे देता है, उसे छपर फाड़कर कर देता है। अफ़ाक़ एक गरीब लड़का था। उसके चाचा ने उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया, लेकिन खुदा ने

उसके सब्र का फल दिया और उसे बादशाह बना दिया। इसीलिए कहा जाता है---

ओ संसार के मालिक , जिसे चाहो राज्य दे दे ,
और जिससे चाहो राज्य छीन ले,
वह सब कुछ करने में सक्षम है।

****भगवान सबका भला करे ****

पाकिस्तान वर्चुअल लाइब्रेरी

www.pdfbooksfree.pk

बच्चों के लिए रोचक, आश्चर्यजनक और रहस्यमय कहानियाँ--

खूनी जंगल 6-00	रात की रानी 6-00.
तिलस्मी जूते 6-00	खूनी रूह 6-00
डाकू का खजाना 6-00	अनोखी बेगम 6-00
जहरीली नागिन 6-00	गुल बकावली 6-00
खूनी मीनार 6-00	जालिम औरत 6-00
खूनी लुटेरा 6-00	काला जिन 6-00
अक्लमंद दोस्त 6-00	हार की चोरी. 6-00
फकीर का तोहफा 6-00	सफ़ेद ठग 6-00
दौलत के पुजारी 6-00	तिलस्मी खंजर 6-00
दो दोस्त 6-00	आखिरी चोरी 6-00

फैज़ान अकादमी
राजपूत मार्केट उर्दू बाज़ार लाहौर